Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 5, MAY - 2022 Publication Date: 15/05/2022

DOIs:10.2018/SS/202205004 --:-- Research Article

नई कविता का स्वरुप और दिनकर का काव्य

[1]डॉ. नवनीता भाटिया, [2]सीमा जौहरी
[1]निर्देशिका (Research Guide), ओ.पी.जे.एस. यूनिवर्सिटी, चुरू, राजस्थान
[2]शोधार्थी, हिन्दी , ओ.पी.जे.एस. यूनिवर्सिटी, चुरू, राजस्थान
ई-मेल – seemajauhari27@gmail.com

सारांश : नई कविता स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लिखी गई वे रचनाएं हैं जिनका भाव पक्ष और शिल्प पक्ष छाया वाद या प्रयोग वाद से पूर्णत: भिन्न हैं| नई कविता क्योंकि यथार्थ के धरातल पर लिखी गई कविता थी, इसलिए छाया वाद और प्रयोग वाद से प्रभावित जनमानस और साहित्य प्रणेता भी इस नए प्रयोग को स्वीकार नहीं कर पाए| परिणाम स्वरुप नई कविता का विरोध भी हुआ| प्रत्येक रचना का गुण होता है नवीनता| इसी को आधार बनाकर नई कविता हिन्दी साहित्य में स्थान पा गई| और काव्य रचना की एक नई शैली का सूत्रपात हुआ।

मूल शब्द : बौद्धिकता, नैराश्य, विसंगति, सकारात्मकता, यथार्थता।

1. नई कविता का स्वरुप और दिनकर का काव्य :

हिन्दी की नई कविता का आरम्भ 1950 के बाद से माना जाना चाहिए। वास्तव में तो प्रयोग वाद का ही विकसित रूप नई कविता कहलाया। छाया वाद ने प्रेम, कल्पना, रोमांटिज्म को महत्व दिया और पाठक वर्ग को एक अलौकिक संसार में लेकर गया। प्रगति वाद मार्क्सवाद की लीक पर चला। प्रयोग वाद में जहाँ व्यक्ति वाद और अत्यधिक बौद्धिकतावादी प्रवृत्ति का बोल बाला रहा, वहीं नई कविता समाज द्वारा, सामान्य जन द्वारा भोगे हुए यथार्थ को लेकर अवतरित हुई। सूक्ष्म से सूक्ष्म जन को लेकर उसके छोटे से छोटे अनुभवों को नई कविता के कवियों ने अपना विषय बनाया। जीवन के विभिन्न विषयों को लेकर नई कविता ने पदार्पण किया था, इसलिए यह किसी भी एक वाद को लेकर नहीं चली। कोई भी कथ्य इन कवियों से अछूता नहीं रहा। कथ्य के प्रति कवियों ने उदार वादी दृष्टिकोण अपनाया। कथ्य को कवि ने उसी रूप में व्यक्त किया जिस तरह से उन्होंने अनुभूत किया था। नई कविता में जीवन के प्रति स्वीकृति बोध है। जीवन के प्रति आस्था व सकारात्मकता भी देखने को मिलती है।

यह कहना अधिक उचित होगा कि नई कविता वादमुक्त स्वरुप लेकर साहित्य के समक्ष उपस्थित हुई। नई कविता तत्कालीन परिस्थितिजन्य थी। नई कविता के कवियों ने जहाँ एक ओर ग्रामीण परिवेश को अपनी कविता का विषय बनाया, वहीं दूसरी ओर शहरी जीवन के हताश, कुंठाग्रस्त, तनाव युक्त परिवेश को भी अपनी कविता में स्थान दिया। नई कविता विगत वादों या कविता कालों से इस प्रकार भिन्न थी कि शेष सभी काल के काव्यों में भारतीय दार्शनिकता, सिद्धांत, या परम्परा या यूं कहें कि यह भारतीय परिवेश से, उसकी परिस्थिति से प्रभावित थी। लेकिन नई कविता पर पाश्चात्य कवियों का प्रभाव देखने को मिलता है। कदाचित यही कारण था कि नई कविता में एक नई परम्परा, एक नया प्रयोग देखने को मिला वह था वस्तु की अपेक्षा शिल्प का प्राधान्य। दिन-प्रतिदिन उपयोग में आने वाली चीजों को प्रतीक के रूप में कई कवियों ने अपनाया।

“ विपदाएँ आते ही,
खुलकर तन जाता है

हटते ही
चुपचाप सिमट ढीला होता है ;
वर्षा से बचकर
कोने में कहीं टिका दो,
प्यार एक छाता है।
आश्रय देता है गीला होता है।" सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 'प्यार एक छाता' ।

प्रेम जो कोमल भावना से जुड़ा है उसके लिए कवि ने छाते को प्रतीक रूप में लिया है।जिस प्रकार छाता हमें भीगने से बचाता है और आश्रय देता है। उसी प्रकार प्रेम भी भीगे मन को उदास हृदय को प्रश्रय देकर अपनी कोमल छाँव से आच्छादित कर देता है। साहित्यकार ने कहा है "नई कविता बातचीत की कविता है। 'जंगल से जनता तक' की यात्रा की कविता है, संसद से सड़क तक जोड़ने वाली कविता है। सामान्य मानव से महा मना सभी व्यक्ति तक सभी विषय नई कविता के विषय हो चुके हैं।"

निराशा–दर्द-घुटन : नई कविता में व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन के प्रति नैराश्यभाव व्याप्त होता हुआ दिखाई देता है। जीवन की विसंगतियों ने व्यक्ति को आक्रांत कर दिया है कि वह मौत के सामने भी जाने को तैयार है –

फोन की घंटी बजी
मैंने कहा – मैं नहीं हूँ
और करवट बदलकर सो गया।
दरवाजे की घंटी बजी
मैंने कहा – मैं नहीं हूँ
और करवट बदलकर सो गया।
अलार्म की घंटी बजी
मैंने कहा – मैं नहीं हूँ
और करवट बदलकर सो गया।
एक दिन
मौत की घंटी बजी---
हड़बड़ा कर उठ बैठा –
मैं हूँ----मैं हूँ----मैं हूँ---
मौत ने कहा – करवट बदलकर सो जाओ। कुंवर नारायण 'मौत ने कहा' ।

अपने ही जीवन से कैसी विरक्ति और निराशा इन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुई है।इन्हीं पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति जीवन से ऊब चुका है।जीवन की विसंगतियों ने उसे पूरी तरह से झकझोर दिया है।

मैंने निचोड़कर दर्द
मन को
मानो सूखने के ख्याल से
रस्सी पर डाल दिया है
और मन
सूख रहा है
बचा-खुचा दर्द
जब उड़ जाएगा
तब फिर पहन लूँगा मैं उसे
माँग जो रहा है मेरा
बेवकूफ तन
बिना दर्द का मन। भवानी प्रसाद मिश्र प्रतिनिधि रचना 'बेदर्द'

मनुष्य कितना संत्रस्त है अपने दुखों और समस्याओं से कि उसे अपना मन दर्द का ही अथाह सागर नजर आता है। जिसमें दर्द के अतिरिक्त और कुछ नहीं। शरीर इस वेदना युक्त मन को ढोते-ढोते ऊब चुका है। थका हुआ नादान शरीर मानो अपेक्षा करता है कि ऐसा मन मिल जाए जिसमें दुख या वेदना का कोई स्थान न हो।

आँगन में काई है,
दीवारें चिकनीं हैं, काली हैं,
धूप से चढ़ा नहीं जाता है,
ओ भाई सूरज मैं क्या करूँ ?
मेरा नसीबा ही ऐसा है !
खुली हुई खिड़की देखकर
तुम तो चले आए,
पर मैं अँधेरे का आदी
अकर्मण्य----निराश----
तुम्हारे आने का खो चुका था विश्वास। दुष्यंत कुमार 'सूर्य का स्वागत'।

बरसों निराशा में जीवन बिताने के बाद जब सुख का सूरज मनुष्य के जीवन में आता है तो वह उसे अपनाने के लिए तैयार नहीं है। क्योंकि उसके जीवन में सुख के, आशा के दिन भी आयेंगे, इसका उसे विश्वास ही नहीं रह गया है। जीवन के प्रति इतनी अकर्मण्यता नई कविता के कई कवियों में देखने को मिलती है।

लघु मानव की प्रतिष्ठा :– प्रत्येक मनुष्य अपनी विशेषताओं और कमियों के साथ अपनी समग्रता लिए हुए होता है। नई कविता ने सामान्य से सामान्य मानव को उसकी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ अभिव्यक्त किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी देश कई आंतरिक समस्याओं से जूझ रहा था। गरीबी, बेरोजगारी ने देश की प्रगति को मानो अवरुद्ध कर दिया था।

दैन्य दानव। क्रूर स्थिति।
कंगाल बुद्धिः मजूर घर भर।
एक जनता का अमर वर :
एकता का स्वर। शमशेर बहादुर सिंह 'बात बोलेगी'।

मजदूर व श्रमिक जैसे श्रमिक वर्ग को कवि ने क्रूर परिस्थितियों से घिरा पाया है। उनके पास केवल एक साथ रहने का ही सहारा है। गरीबी और लाचारी ने उनको पूरी तरह तोड़ दिया है। कोई सहारा नजर नहीं आता है।

जीवन के प्रति सकारात्मकता :- नई कविता के कवियों ने चाहे विसंगतियों या समस्याओं, घुटन, निराशा से भरी हुई कविता लिखी हो, परन्तु जीवन के प्रति वे पूर्णत: निराश या नकारात्मक भी नहीं हैं। जीवन के उज्ज्वल व सकारात्मक पक्ष को दिखाकर इन कवियों ने मानव को जीवन की ओर आशावादी दृष्टिकोण भी दिया है –

नाश के दुःख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर !
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर ! हरिवंश राय बच्चन 'नीड़ का निर्माण फिर फिर'।

नई कविता कितनी भी नैराश्य को कुंठा को लेकर क्यों न लिखी गई हो लेकिन फिर भी नव जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि भी इन कवियों ने रखी है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। अन्तत: रात्रि के पश्चात दिवस का आना निश्चित ही होता है। नई कविता ने यह बखूबी दिखाया और किसी भी परिस्थिति में नव जीवन के प्रति आशावान रहना सिखाया।

अति यथार्थता :– नई कविता छायावाद से बिलकुल विपरीत दृष्टिकोण लेकर काव्य जगत में अवतरित हुई। जिसमें कल्पना या सौंदर्य का स्थान नगण्य ही रहा। जीवन की कठोर सच्चाई को, उसके कठोर यथार्थ को इन कवियों ने बिना किसी सुंदर आवरण के ज्यों का त्यों ही पाठक के सामने व्यक्त किया।

वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने हों बड़े,
एक पत्र छांह भी,
माँग मत, माँग मत, माँग मत,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ !
तू न थकेगा कभी,
तू न रूकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ !
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ ! हरिवंश राय बच्चन 'अग्निपथ' ।

यही जीवन की यथार्थता है कि जीवन संघर्षों की श्रृंखला है। जीवन एक अग्निपथ के समान है जिसमें अनेक बाधाएँ हैं, रुकावटें हैं। फिर भी मनुष्य आगे लक्ष्य की ओर बढ़ता है। नई कविता में यही वास्तविकता बताकर मनुष्य को हमेशा संकटों का सामना करने के लिए तत्पर रहने को कहा है। इन कवियों ने जनमानस को कोरे कल्पना लोक का विचरण नहीं करवाया और न ही मिथ्या सौन्दर्यपूर्ण जीवन की रंगीनियाँ या सुगमताएँ बताईं। इन्होंने युग के यथार्थ को न केवल भोगा और स्वीकार किया, बल्कि अपने युगजन को भी आगाह किया कि जीवन केवल सुखों की सेज नहीं, दुखों की शय्या भी है।

नए शिल्प :– नए शिल्प के नए प्रयोग नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता रही। नई कविता का सरोकार सामान्य जन जीवन से था। नई कविता की भाषा किसी एक भाषा शैली में बंधकर नहीं रही। इसमें सामान्य बोलचाल की भाषा को ही अंगीकृत किया गया। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू, फारसी शब्दों का यथायोग्य उपयोग किया गया। कुछ ने शब्द भी नई कविता में देखे गए। कवियों ने प्राय: लोकजीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लेकर अपनी नई कविता को जनमानस की संवेदनाओं और अनुभूतियों के अधिक करीब लाने का प्रयास किया। लोक भाषा के शब्दों से तो यह कविता भरी पड़ी है।

नई कविता पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव अवश्य था फिर भी कवियों ने ग्रामीण परिवेश के साथ उसकी भाषा शैली को भी अपनाया। अज्ञेय उन चुनिंदा कवियों में से थे जिन्होंने शहरी और ग्रामीण दोनों ही जीवन शैली को अपनी रचनाओं में स्थान दिया।

कैसे बनठनिये आये नचनिये !
'पाय लागी, पाधा,
राम-राम, बनिये !
हम आये नचनिये !'
नाचोगे ?' 'काहे नहीं नाचेंगे ?
जब तक नचायेंगे ।अज्ञेय 'आये नचनिये'

केवल भाषा ही नहीं, कवि अज्ञेय ने जीवन शैली भी ग्रामीण परिवेश से युक्त बताई है। एक अन्य उदाहरण उन्हीं की कविता से शहरी जीवन का –

गैस के प्रकाश की तीखी गर्म लपलपाती जीभ
पत्ती-पत्ती घास-तले लुके-दुबके उदास
सहमे हुए धुएँ को लील लिए जा रही है,
और बल्कि

देख इस निर्मम व्यापार को असंख्य असहाय पतिंगे
तिलमिला उठे हैं, सिर पटक के चीत्कार कर उठे हैं कि
निर्दयी हंडे ने उन्हीं का अंतिम आसरा भी लूट लिया। अज्ञेय 'इत्यलम' 'पार्क की बेंच'

कवि ने शहरों के पार्कों में लगी लाइटों के कारण कितने जीव परेशान होते हैं और मर जाते हैं इसका वर्णन आधुनिक वर्णन के सन्दर्भ में किया है।

प्रकृति चित्रण :– नई कविता ने जब नये प्रतीकों, बिम्बों को अपनाया तो उनका प्रयोग करते हुए प्रकृति का सौन्दर्यपूर्ण चित्रण भी किया।

उनींदी चाँदनी उठ खोल अंतिम मेघ वातायन
मिलें दो-चार हम को भी शरद के हास मुक्ताकन। अज्ञेय 'हरी घास पर क्षण भर' 'उनींदी चाँदनी'।

दिनकर का काव्य :– नई कविता किसी भी वाद से परे थी। प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से भिन्न प्रवृतियाँ इसमें और अधिक विकसित रूप में उभरकर आईं। नई कविता के मूर्धन्य कवियों में अधिकतर तारसप्तक के ही कवि थे। लेकिन ऐसा भी नहीं था कि केवल उन्हीं कवियों की रचनाएँ नई कविता कहलाईं। इनसे पूर्व और पश्चात के कवि भी नई कविता की विशेषताओं व प्रवृत्तियों को लेकर रचनाएँ कर रहे थे। और कुछ कवि ऐसे भी थे जिनमें नई कविता की प्रवृत्तियाँ पहले से ही समाविष्ट थीं। दिनकर के काव्यों पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि नई कविता में वे समावेशित थीं। दिनकर का काव्य स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक, देश के विभाजन से भी आगे तक का रहा है। कवि दिनकर दोनों ही स्थितियों के साक्षी रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व के अंग्रेजों के अत्याचार व देशवासियों की गुलामी की प्रताड़ना को भी देखा और आजादी के बाद विभाजन के दंश को भी उनके संवेदनशील हृदय ने वहन किया। इसके मध्य सभी सामाजिक, राष्ट्रीय व नैतिक परिस्थितियों ने उन्हें प्रभावित किया ।परिणाम स्वरुप इन समस्त घटनाओं को अपनी पूरी तथ्यता, सच्चाई व तटस्थता के साथ जनता के समक्ष प्रस्तुत किया।

दिनकर एक संवेदनशील कवि थे। उन्होंने साहित्य जगत में रहते हुए केवल साहित्यकार के ही कर्तव्य को नहीं निभाया बल्कि एक सच्चे देशभक्त व राष्ट्र कवि होने के अपने उत्तरदायित्व को भी उठाया। देश में बढ़ते हुए अन्याय, अनाचार व शोषण से उनका हृदय पीड़ित हो जाता था। देश के नागरिक के प्रति अपनी सहानुभूति के साथ-साथ उन्होंने उन शोषकों को दो टूक भी सुनाई है। कई बार वे समाज के निष्क्रिय रुख से नाराज हुए तो कभी सत्तापक्ष के कर्तव्य हीन रवैये से कुपित हुए तो कभी अपने ही व्यक्तिगत जीवन की निराशा, परिवार के टूटने का दर्द, पुत्र रत्न खो देने की पीड़ा उन्हें कुंठित करती रही और वे इन सब अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में स्थान देते चले गए। नई कविता में जिस निराश और कुंठित जीवन को शब्दों में पिरोया गया है वह दिनकर की कविताओं में देखा जा सकता है।

है बंधी तकदीर जलती डार से,
आशियाँ को छोड़ उड़ जाऊँ कहाँ ?
वेदना मन की सही जाती नहीं,
यह जहर लेकिन उगल आऊँ कहाँ ? रामधारी सिंह दिनकर 'हुंकार' 'तकदीर का बंटवारा'

दिनकर धरती से जुड़े भारत माँ के पुत्र थे। कल्पना लोक में विचरना कदाचित उन्हें सामान्य मानव के जीवन तथा उसकी अनेक चुनौतियों के परिचय से कहीं दूर ले जाता, इसलिए उन्होंने जन कवि के रूप में जीवन की वास्तविकता को व्यक्त करते हुए समाज में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया।

स्वामिन ! अंधड़ आग बुला दो,
जले पाप जग का क्षण-भर में
डिम-डिम डमरू बजा निज कर में,
नाचो, नयन तृतीय तरेरे !
ओर-छोर तक सृष्टि भस्म हो
चिता-भूमि बन जाए अरेरे !
रच दो फिर से इसे विधाता, तुम शिव,सत्य और सुन्दर !

नाचो ! हे नाचो, नटवर ! रामधारी सिंह दिनकर 'रेणुका'-'तांडव'

तांडव कविता में कवि शिव का आह्वान करते हैं कि जिससे समस्त पाप नष्ट हो जाएँ और एक नए संसार और एक नई सृष्टि की संरचना हो सके। सामाजिक और आर्थिक शोषण से किसान, श्रमिक मजदूर त्रस्त है और दुखी है। अन्य अधिकारों की तो दूर की बात है दो जून रोटी से भी वह वंचित है। दिनकर जब इस वर्ग की यह दुर्दशा देखते हैं तो उनका करुणाप्रद मन व्यथा से सिहर उठता है -

चारों दिशि ज्वाला-सिन्धु घिरा,
धू-धू करतीं लपटें अपार,
बंदी हम व्याकुल तड़प रहे
जानें किस प्रभुवर को पुकार?
मानवता की दुर्गति देखें,
कोई सुन ले यह आर्तनाद,
कोई कह दे क्यों आन पड़ा
हम पर ही यह सारा विषाद रामधारी सिंह दिनकर 'रेणुका' 'मनुष्य'

कवि स्वयं को भी उन सामान्य जनमानस में से एक मानता है जो निरंतर दुखों का बोझ लिए जीवन जी रहा है। पूँजीवादी शोषण भयंकर रूप से चलता हुआ हर जगह व्याप्त है। शोषित और दलित जन घुट-घुटकर मर रहा है फिर भी उसकी पुकार सुनने वाला कोई नहीं है।

भारत एक स्वप्न भू को ऊपर ले जानेवाला
भारत एक विचार स्वर्ग को, भू पर लाने वाला।
भारत है संज्ञा विराग की, उज्ज्वल आत्म उदय की।
भारत है आभा मनुष्य की, सबसे बड़ी विजय की। रामधारी सिंह 'नीलकुसुम' 'हिमालय का सन्देश' ।

विश्वबंधुत्व, शान्ति सौहार्द, मैत्री जैसे भावों के प्रति दिनकर जी का दृष्टिकोण हमेशा से ही सकारात्मक रहा। यह सच है कि वे हिंसा व युद्ध का समर्थन करते हुए भी दृष्टिगत हुए हैं । इसके बावजूद उन्होंने इन मूल्यों को कभी नहीं त्यागा। वे मानते थे कि इनके ही आधार पर उज्ज्वल भारत की सुंदर इमारत का निर्माण संभव है। 'किसको नमन करूँ में' कविता में भी दिनकर का स्वर विश्वबन्धुता को मुखरित करता है। कवि एक ऐसी सृष्टि की कल्पना करते हैं जहाँ शान्ति और सौहार्द की शीतल छांह हो। एक ऐसी सृष्टि जहाँ राष्ट्रों के मध्य वैमनस्य न हो। एक ऐसी सृष्टि जहाँ जाति-जाति के बीच भेदभाव न किया जाता हो।

"जब उतरेगी शान्ति मनुज का मन जब कोमल होगा।
जहाँ आज है गरल वहाँ, शीतल गंगा जल होगा।" रामधारी सिंह दिनकर 'किसको नमन करूँ मैं'

प्रकृति चित्रण :-

दिनकर जी ने अपने काव्य में प्रकृति का भी चित्रण बखूबी किया है। प्रकृति और मानव का सम्बन्ध सदा से रहा है। प्रकृति की गोद में ही मनुष्य अपनी आँखें खोलता है। उसका सम्पूर्ण जीवन प्रकृति पर आधारित और उसके परिवेश में ही गुजरता है। यह साहचर्य स्वाभाविक है, प्राकृतिक है, नैसर्गिक है। हिन्दी साहित्य ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय साहित्य प्रकृति चित्रण से सुशोभित है। कवियों, साहित्यकारों ने प्रकृति का चित्रण कई प्रकार से किया है यथा आलम्बन रूप में, उद्दीपन रूप में, संदेशवाहक के रूप में, पृष्ठभूमि के रूप में और मानव रूप में। हालाकि मानव रूप में प्रकृति का चित्रण करने में प्रकृति गौण हो जाती है। और मानव क्रियाएं ही प्रधान रहती हैं। इन मानव क्रियाओं को ही प्रकृति के तत्वों पर आरोपित किया जाता है। जिसके माध्यम से मानवीय संवेदनाएं या प्राकृतिक सौन्दर्य क्रमशः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दिखाया जाता है। दिनकर जी राष्ट्र वादी, क्रांतिकारी कवितायें लिखी हैं। फिर भी कोमलहृदय दिनकर कवि के लिए प्रकृति के सौन्दर्य वर्णन का लोभ त्याज्य न रहा।

अम्बर के गृह गान रे, घन-पाहुन आये ।
इन्द्रधनुष मेचक-रूचि-हारी,
पीत वर्ण दामिनी-द्युति न्यारी,

प्रिय की छवि पहचान रे, नीलम घन छाये।
वृष्टि-विकल घन का गुरु गर्जन,
बूँद-बूँद में स्वप्न विसर्जन,
वारिद सुकवि समान रे, बरसे कल पाये। रामधारी सिंह दिनकर 'नीलकुसुम' 'पावसगीत' ।

वर्षाऋतु के इस वर्णन में कवि ने आकाश में छाये काले मेघों के साथ-साथ उनके बीच दिखते इन्द्रधनुष की सुंदर कल्पना की है। मेचक अर्थात काले बादलों के बीच चमकती बिजली पावस ऋतु की सघनता को और भी बढ़ा देती है।

द्रुमों को प्यार करता हूँ
प्रकृति के पुत्र ये
माँ पर सभी कुछ छोड़ देते हैं
न अपनी ओर से कुछ भी कभी कहते
प्रकृति जिस भाँति रखना चाहती
उस भाँति ये रहते। रामधारी सिंह 'नए सुभाषित' 'वृक्ष' ।

दिनकर जी गाँव की प्रकृति के बीच पले-बढ़े हैं। वृक्षों व फसलों से उन्हें विशेष लगाव था। प्रकृति का संसर्ग ही मनुष्य का जीवन है। यह वे भली-भाँति जानते थे। वृक्ष जीवन दाता हैं। प्राणवायु दाता हैं। निस्वार्थ पूर्ण वे अपना सर्वस्व बलिदान कर देते हैं।

2. उपसंहार :

कहा जा सकता है कि दिनकर जी में नई कविता के सभी तत्व मौजूद थे। उन्होंने समकालीन परिस्थितियों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। व्यक्तिगत दुखों समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक-राजनीतिक विषमताओं की अभिव्यक्ति को भी अपना उत्तरदायित्व समझा और जन मानस को उसके प्रति सचेत करते हुए अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए रचना भूमि तैयार की।

सन्दर्भ सूची :

1.सक्सेना सर्वेश्वर दयाल, (1959), प्यार एक छाता, राजकमल प्रकाशन।
2.नारायण कुंवर, (2008), मौत ने कहा , राजकमल प्रकाशन।
3.मिश्र भवानी प्रसाद, (2018), बेदर्द, राजकमल प्रकाशन।
4.कुमार दुष्यंत (1957), सूर्य का स्वागत, राजकमल प्रकाशन।
5.सिंह शमशेर बहादुर (1961), बात बोलेगी, राधाकृष्ण प्रकाशन।
6.बच्चन हरिवंश राय (2017), नीड़ का निर्माण फिर, राजकमल प्रकाशन।
7.बच्चन हरिवंश राय (2017), अग्निपथ, राजकमल प्रकाशन।
8.अज्ञेय हीरानंद सच्चिदानंद (1981(, आये नचनिए, राजपाल एंड सन्स।
9.अज्ञेय हीरानंद सच्चिदानंद (1946), इत्यलम 'पार्क की बेंच', राजपाल एंड सन्स।
10.अज्ञेय हीरानंद सच्चिदानंद (1949), हरी घास पर क्षण भर 'उनींदी चाँदनीं' राजपाल एंड सन्स।
11.दिनकर रामधारीसिंह (2017), हुंकार 'तकदीर का बँटवारा' , लोकभारती प्रकाशन।
12.दिनकर रामधारीसिंह (2009), रेणुका 'तांडव', लोकभारती प्रकाशन।
13.दिनकर रामधारीसिंह (2009), रेणुका 'मनुष्य' , लोकभारती प्रकाशन।
14.दिनकर रामधारीसिंह (1956), नीलकुसुम 'हिमालय का सन्देश', उदयाचल प्रकाशन।
15.दिनकर रामधारीसिंह (2002), किसको नमन करूँ, साहित्य दर्पण।
16.दिनकर रामधारीसिंह (1956), नीलकुसुम 'पावसगीत', उदयाचल प्रकाशन
17.दिनकर रामधारीसिंह (1957), नए सुभाषित 'वृक्ष', उदयाचल प्रकाशन।
18. जगदीश गुप्त (1966), नई कविता-स्वरुप और समस्या भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ।
19. डॉ. प्रेम शंकर (1988), नई कविता की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।